उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल एवं जीवन कौशल के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

शिक्षाशास्त्र में

पीएच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशक

डॉ. मंजू शर्मा
(डायरेक्टर) शिक्षा संकाय
ज्योति विद्यापीठ विश्वविद्यालय
जयपुर राज.

शोधकर्त्री

सरोज शर्मा
JV-P/22/10033

शोध केन्द्र

शिक्षा संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) भारत

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	1—5
2	समस्या का औचित्य	6
3	समस्या कथन	6
4	संक्रियात्मक परिभाषा	6—7
5	संबंधित साहित्य	7—19
6	शोध के उद्देश्य	19—20
7	शोध की परिकल्पनाऐं	20
8	शोध में प्रयुक्त विधि	21
	जनसंख्या	21
	न्यादर्श	21
	शोध के चर	21—22
	शोध में प्रयुक्त उपकरण	22
	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	22—24

	अध्ययन की परिसीमाऐं	24–25
	अध्यायों की रूपरेखा	25
	संदर्भ ग्रंथ सूची	26

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल एवं जीवन कौशल के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन

1. प्रस्तावना

शिक्षा का तात्पर्य जीवन में चलने वाली ऐसी प्रक्रिया–प्रयोग से है जो मनुष्य को अनुभव द्वारा प्राप्त होते है एवं उसके पथ–प्रदर्शक बनते है। यह प्रक्रिया सीखने के रूप मे बचपन से चलती है एवं जीवनपर्यन्त चलती रहती है। जिसके कारण मनुष्य के अनुभव भण्डार में लगातार वृद्धि होती रहती है।

शिक्षा शब्द संस्कृत के शिक्ष् धातु से बना है, जिसका अर्थ सीखना अथवा सिखाना होता है। शिक्षा का अर्थ आन्तरिक शक्तियों अथवा गुणों का विकास करना है।

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ

शिक्षा का अंग्रजी पर्यायवाची शब्द 'Education' है। 'Education' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Educatum' शब्द से मानी जाती है। 'Educatum' शब्द दो शब्दों– 'e' तथा श्कनबवश से मिलकर बना है। 'e' का अर्थ– 'out of' और 'duco' का अर्थ है– 'to lead forth' or 'to eÛtract out'। अतः इस प्रकार से Education का शाब्दिक अर्थ है– आन्तरिक को बाहर लाना।

शिक्षा के व्यापक अर्थ को प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री टी. रेमण्ड ने इस प्रकार स्पष्ट किया है, शिक्षा विकास का वह क्रम है जो बाल्यावस्था से परिपक्वावस्था तक निरन्तर चलता रहता है एवं शिक्षा में मनुष्य अपने आपको आवश्यकतानुसार धीर–धीर भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है।

डम्बिल के शब्दों मे, शिक्षा के व्यापक अर्थ के अंतर्गत वे सभी प्रभाव सम्मिलित होते है, जो मानव को बाल्यावस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त तक प्रभावित करते है।

मैकेन्जी के शब्दों में, व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जीवन–पर्यन्त चलती रहती है तथा जीवन के प्रत्येक अनुभव से शिक्षा में वृद्धि होती है।

मानव की इस सीखने की प्रवृत्ति को शिक्षा कहा गया है, जिसे मानव ने स्वयं विकसित किया है। इन सीखने के प्रयासों द्वारा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, चरित्र, आदतों तथा जीवन शैली

में परिवर्तन लाता है। इन परिवर्तनों द्वारा व्यक्ति सामान्य प्राणी से सामाजिक प्राणी एवं सामाजिक प्राणी से बौद्धिक प्राणी बनता है। शिक्षा अपने परिष्कृत एवं शुद्ध रूप से मानव को विवेकशील बनाती है। इसी कारण मनुष्य को प्रकृति की सर्वोत्तम कृति माना जाता है। मानव अपनी बुद्धि तथा शक्तियों का प्रयोग करके अपने जीवन को अधिक सुन्दर व उपयोगी बनाने के लिए स्वयं को वातावरण के अनुकूल बनाने का प्रयत्न करता रहता है। वातावरण में परिवर्तन शिक्षा के द्वारा सम्पन्न होता है। मनुष्य को सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा वह ज्योति है, जो मानव के जीवन में अज्ञान–रूपी अन्धकार को उजाला प्रदान करती है। शिक्षा से ही व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है।मानव जीवन एवं मानव विकास में शिक्षा के महत्त्व के संदर्भ में **अरस्तु ने लिखा है कि** "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहकर अपना विकास करता है। समाज के लिए व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है।"

जीवन एवं सामाजिक कौशल के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है। जीवन और सामाजिक कौशल उनके संचार कौशल, सहयोग, प्रोत्साहन को बढ़ाने के साथ जीवन मूल्यों की समझ भी विकसित करते है। अतः जीवन और सामाजिक कौशल विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं के लिए एक उपाय के रूप में काम कर सकती है क्योंकि इससे विद्यार्थियों को बेहतर जीवन जीने में मदद मिलती है। जीवन और सामाजिक कौशल शिक्षा के लिए समाज की आवश्यकता है और हर शिक्षा प्रणाली को अपने पाठ्यक्रम के रूप में जीवन और सामाजिक कौशल शिक्षा प्रदान करना चाहिए क्योंकि यह सकारात्मक स्वास्थ्य व्यवहार, सकारात्मक पारस्परिक संबंधों और व्यक्तियों की अच्छी तरह से पैदा करने में सक्षम है।

सामाजिक कौशल

अमेरिका की पैन स्टेट तथा ड्यूक यूनिवर्सिटी ने एक रिसर्च की थी जिसके मुताबिक जिन बच्चो को बचपन से ही सामाजिक कौशल अच्छे से प्रदान की जाती है वो बड़े होकर ज्यादा कामयाब होते हैं उन बच्चों से जिन्हें सामाजिक कौशल बढिया ढंग से नहीं दी जाती। इस अध्ययन से पता लगता हैं कि सामाजिक कौशल की कितनी अधिक उपयोगिता हैं यह जिंदगी भर काम आने वाल ज्ञान होता हैं।

सामाजिक कौशल वो स्किल्स होती हैं जिनके द्वारा हम किसी दूसरे व्यक्ति से बातचीत करते हैं या अपनी बात उनको समझाते हैं। इन स्किल्स का उपयोग बोलकर तथा बिना बोले मतलब इशारो में, बॉडी लैंग्वेज से दुसरो से संपर्क स्थापित करने के लिए किया जाता हैं। अगर दूसरे शब्दों में कहे तो बहुत अच्छे ढंग से दूसरो तक अपनी बात को पहुँचाना उनसे मिलना, ताकि लोग आपसे प्रभावित हो सके, यह सब सामाजिक कौशल ही कहलाता हैं।
कुछ तरीके जिनसे सामाजिक कौशल का पता चलता हैं वो हैं

- भाषा का सही तरीके से प्रयोग
- हमारी आवाज़ का लहज़ा तथा गति
- दुसरो से मिलते या बात करते हुए हमारा शारीरिक हाव–भाव
- हमारे चहरे का हाव–भाव
- आँखों का बातचीत करते हुए सही ढंग से मेल–जोल

सामाजिक कौशल के प्रकार

वैसे तो हर काम में सामाजिक कौशल का प्रयोग होते हुए देखा जा सकता है। फिर भी इसके छह प्रकार प्रमुख है–

सामंजस्य कौशल

सामंजस्य एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक कौशल हैं। इस कौशल के द्वारा मित्रों, परिवारजनों, रिश्तेदारों और कक्षा समूह के अन्य सदस्यों के साथ सामंजस्य बनाने में सहायता प्राप्त होती है।

मोलभाव कौशल

अपनी शर्तों पर अपनी ही बात को मनवाना मोलभाव कौशल होता है। यह व्यापार, नौकरी आदि में काम आने वाला कौशल है।

परामर्श कौशल

परामर्श कौशल का मतलब किसी को कुछ पढ़ाने से, सिखाने से या दूसरों की सहायता करने से होता हैं। कोई सलाह मांगता है तो हम सलाह देते है, ये भी परामर्श कौशल के अंतर्गत ही

आता हैं। दूसरो को सिखाते कैसे हैं, दूसरो की सहायता कैसे की जाती हैं? यह सब जानने वाला व्यक्ति समाज में एक बेहतर इन्सान के रूप में पहचाना जाता है।

प्रोत्साहन कौशल

प्रोत्साहन सामाजिक कौशल को मनाने का सामाजिक कौशल भी कहते हैं। मित्रों आदि से रिश्ते को बेहतर करना हो या किसी से कोई काम निकलवाना हो लोगों को दूसरो को मानना आना चाहिए। बहुत सारे ऐसे अध्ययन हुए हैं जिनमे पाया गया है कि जिन लोगो को दूसरो को मानाने की कला आती हैं वो ज़िन्दगी में काफी कुछ बेहतर कर पाते हैं तथा उनके रिश्ते भी काफी ज्यादा समय तक टिकते हैं।

सेवा अभिविन्यास कौशल

सेवा अभिविन्यास सामाजिक कौशल का मतलब होता हैं कि लोगो के साथ करुणापूर्वक उनकी मानसिकता के अनुसार विकसित होना। लोगो की भावनाओं के अनुसार अपने क्रिया–कलापों में परिवर्तन करना। ऐसा सामाजिक कौशल रखने वाले लोग दूसरे लोगो की स्थिति को देखते हुए करुणा भाव से या सेवा भाव से व्यवहार करते हैं। अगर सेवा अभिविन्यास कौशल व्यक्ति के अन्दर हो तो वह समाज में एक सम्मान और प्रेम पाने वाले व्यक्ति बन जाते हैं।

सोशल अनुभूति कौशल

सोशल अनुभूति सामाजिक कौशल वह कौशल होता है जिनमें दूसरो के द्वारा किये गए कार्यो को समझ कर अपनी प्रतिक्रिया दी जाती है। कोई भी व्यक्ति जो पहले समझता है तथा थोडा ठहर कर प्रतिक्रिया देता हैं वो सोशल अनुभूति कौशल का इस्तेमाल करता हैं।

सोशल स्किल्स का महत्व

बेहतर सम्बन्ध बनाते है।

बेहतर संचार कौशल करने में सहायक होते है।

कार्यक्षमता में वृद्धि करते है।

करियर के क्षेत्र में उपलब्धि दिलवाते है।

खुशी में वृद्धि करते है।

जीवन कौशल

जीवन कौशल से तात्पर्य है जो व्यक्तित्त्व के चहुँमुखी विकास के साथ घर, परिवार, समाज, राष्ट्र व अंतर्राष्ट्रीयता से अनुकूलन व अपनत्व का अहसास करा सकें। अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक रूप प्रदान कर सकें, जीवन के संघर्षो को समझने और उनसे जूझने की क्षमता प्रदान कर सके। जीवन की आपत्तियों से घबराकर कायरों की तरह पलायन करने की अपेक्षा विवेकसम्मत सामना कर सकें। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार"जीवन कौशल अनुकूलात्मक और सकारात्मक व्यवहार की वह योग्यताएं हैं, जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की मांगों और चुनोतियों से प्रभावपूर्ण समायोजन करने योग्य बनाती है।"

जीवन कौशल अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार की ऐसी क्षमताएं है जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की मांगों और चुनौतियों का प्रभावी रूप सेसामना करने का सामर्थ्य प्रदान करती है। जीवन में असंख्य कौशल होते हैं जिनकीप्रकृति की परिभाषा, वातावरण, संस्कृति और परिवेश के अनुसार भिन्न होतेहैं।

जीवन कौशल मुख्यतः तीन घटकों पर आधारित है –

1.ज्ञान अथवा सूचना,

2.आचरण और मूल्य,

3.व्यवहार परिवर्तन,

जीवन कौशल अन्य कौशलों से भिन्न होते हैं। अन्य कौशल सामान्यजीवन जीने में तो सहायक हैं लेकिन इन कौशलों का प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोगकरनेके लिए जीवन कौशलों की आवश्यकता होती है, परम्परागत ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के व्यावहारिक उपयोग के लिए जिन चीजों की आवश्यकता है, वेसभी जीवन कौशल में निहित है। इससे किशोरों के व्यवहार में दायित्त्वों का बोधजागृत होगा और वे मानसिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ किशोर बन सकेंगे। हमारे वातावरण में कई संसाधन और सुविधाएं उपलब्ध होती हैं जिनको प्रयोकरने के लिए कुशलताओं की जरूरत है। इन जीवन कुशलताओं को बढ़ाने में मदद करने वाला कौशल जीवन कौशल कहलाता है।

2.समस्या का औचित्य

वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में तीव्रता से परिवर्तन आ रहा है। शिक्षा केवल कक्षा कक्ष में पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है। शिक्षा प्राप्त करने के कई संसाधन उपलब्ध है जिससे विद्यार्थी अब केवल शिक्षक पर निर्भर नहीं है। इसका प्रभाव उनके जीवन एवं सामाजिक कौशल पर होता है। इसके साथ ही विद्यार्थियों के जीवन और सामाजिक कौशल संबंधित पाठ्यसामग्री में परिवर्तन आ रहा है और विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में अपना कौशल दिखा रहे है। यह क्षेत्र कला, खेल, साहित्य आदि हो सकते है। इन क्षेत्रों में अपना कौशल दिखाने पर विद्यार्थियों पर किस प्रकार का और किस स्तर का प्रभाव पड़ता है यह जानना आवश्यक है। जिससे जीवन और सामाजिक कौशल संबंधित आंकडों के आधार पर पाठ्यक्रम, पढ़ाने के तरीके, विद्यार्थियों में जीवन कौशल बढ़ाने में विद्यालयों को सहायता मिल सकेगी और भविष्य में यह शोध शिक्षा नीतियों में जीवन कौशल को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकेगा।

3. समस्या कथन

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल एवं जीवन कौशल के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन

4. संक्रियात्मक परिभाषा

1. सामाजिक कौशल – सामाजिक कौशल वो स्किल्स होती हैं जिनके द्वारा हम किसी दूसरे व्यक्ति से बातचीत करते हैं या अपनी बात उनको समझाते हैं। इन स्किल्स का उपयोग बोलकर तथा बिना बोले मतलब इशारो में, बॉडी लैंग्वेज से दुसरो से संपर्क स्थापित करने के लिए किया जाता हैं।

2. जीवन कौशल – जीवन कौशल अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार की ऐसी क्षमताएं है जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की मांगों और चुनौतियों का प्रभावी रूप सेसामना करने का सामर्थ्य प्रदान करती है।

3. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी – वह विद्यार्थी जो कक्षा 6 से 8 में अध्ययन करते है।

5. साहित्य समीक्षा

ओम (2012) ''शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तिगत उपलब्धि समाजिक कौशल के सम्बन्ध का लिंगगत संदर्भ में अध्ययन'', राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

उद्देश्य

1. महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तिगत उपलब्धि में सम्बन्ध ज्ञात करना।
2. महाविद्यालय स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यक्तिगत उपलब्धि एवं समाजिक कौशल का सम्बन्ध ज्ञात करना।
3. महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तिगत उपलब्धि एवं समाजिक कौशल में परस्पर सम्बन्ध ज्ञात करना।

निष्कर्ष

शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तिगत उपलब्धि का समाजिक कौशल से सम्बन्ध पाया जाता है।

शर्मा, डी.एल. (2012) ''सामाजिक कौशल एवं जीवन कौशल प्रशिक्षण'', राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

उद्देश्य

कॉलेज के 97 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लेकर उनकी कार्यक्षमता में जीवन–कौशल के प्रशिक्षण के प्रभावों को देखना।

निष्कर्ष

1. सामाजिक कौशल क्षेत्र में–विद्यार्थियों में सुधार आदि देखा गया।

2. मानसिक एवं भावात्मक क्षेत्र में– आवेग–संवेग नियंत्रण क्षमता में एकाग्रता विकास, कार्य के प्रति रूचि में वृद्धि, स्मरण शक्ति का विकास में वृद्धि देखी गयी।

3. संज्ञानात्मक क्षेत्र में–ज्ञानात्मक विकास में वृद्धि देखी गयी।

अग्रवाल, मीनू (2012) ''राजस्थान में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व, जीवन कौशल, अनुशासन, आचरण व सामाजिक एवं जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन'', राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

उद्देश्य

1. विभिन्न शैक्षिक समस्याओं द्वारा संचालित विद्यालयों के व्यक्तित्व का अध्ययन।

2. विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन व जीवन कौशल अध्ययन।

3. विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों में आचरण का अध्ययन।

4. विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं जीवन कौशल का अध्ययन करना।

6. विद्यार्थी आचरण मापनी का निर्धारण करना।

7. विद्यालय को जानकारी हेतु अनुसूची का निर्माण करना।

निष्कर्ष

1. तथ्य व निम्न समूह के विद्यालयी भिन्नता का प्रभाव विद्यालयी समूहों के छात्रों के नम्रता मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है।

2. उच्च्व व निम्न समूह के विद्यालयी भिन्नता का प्रभाव विद्यालयी समूहों के छात्रों के आचरणों पर प्रभाव पड़ता है।

3. उच्च्व व निम्न समूह के विद्यालयी भिन्नता अध्ययनरत छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार को प्रभावित करती है।

4. उच्च व निम्न समूह के विद्यालयी भिन्नता का प्रभाव विद्यालयी समूह के छात्रों के मानवता मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है।

अविनाश सिंह (2012) इलाहाबाद के ''किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व उनके मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल पर सामाजिक एवं जीवन कौशल के प्रभाव का अध्ययन'', इलाहबाद विश्वविद्यालय।

उद्देश्य

1. उच्च स्तर व निम्न स्तर वाले वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।
2. बेहतर समाजिक एवं जीवन कौशल वाली बालिकाओं का पता लगाना।

निष्कर्ष

1. अच्छे स्तर वाले व निम्न स्तर वाले वातावरण के विद्यार्थियों की शैक्षिक व मानसिक उपलब्धि के मध्यमानों में अंतर नहीं पाया गया।
2. बेहतर स्तर व समाजिक एवं जीवन कौशल वाली बालिकाओं के निष्पत्ति के मध्यमानों में अंतर पाया गया।

तलेसरा, हेमलता (2013) "सामाजिक कौशल जीवन कौशल द्वारा मूल्यों का निर्माण'', के.बी.देव महाविद्यालय, मेहसाना, गुजरात।

उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल के द्वारा सकारात्मक परिणामों का अध्ययन करना।
2. अनुशासित जीवन जीने के लिए मूल्यों की अवधारणा को समाहित करना।

निष्कर्ष

जीवन मूल्यों के विकास हेतु सामाजिक एवं जीवन कौशलों के परिणाम अत्यन्त उत्साही व सकारात्मक रहें।

डी.एन. (2013) ''शैक्षिक दबाव एवं जीवन कौशल के साथ व्यापन'', राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

उद्देश्य

1. बालकों के मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल का पता लगाना।

2. अध्यापकों द्वारा अनावश्यक दबाव का बालकों के मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1. इस अध्ययन में पाया गया कि अनावश्यक दबाव अध्यापकों द्वारा डाला गया।
2. 50 प्रतिशत बालकों का कहना था कि कुछ शिक्षक दबाव बढ़ाने के लिए अंतिम समय में कार्य देते हैं जिससे मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल प्रभावित होता है।

ए.एन. प्रसाद (2013) ''लिंग भेद के आधार पर विद्यालय शिक्षकों के समायोजन एवं जीवन कौशल पर सामाजिक एवं जीवन कौशल का प्रभाव'' देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

उद्देश्य

1. पुरुष अध्यापकों के तनाव व समायोजन पर सामाजिक एवं जीवन कौशल का अध्ययन करना।
2. महिल अध्यापिकाओं के तनाव व समायोजन पर सामाजिक एवं जीवन कौशल का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

पुरुष अध्यापकों के जीवन कौशल (तनाव) व समायोजन पर सामाजिक एवं जीवन कौशल का प्रभाव महिला अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक पड़ता है।

गोचर, बद्रीलाल (2013) ''विभिन्न प्रकार के सामाजिक कौशल कार्यक्रमों का किशोर छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व तथा सामाजिक एवं जीवन कौशल पर प्रभाव का अध्ययन'', राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंसेज, जयपुर।

उद्देश्य

1. किशोर छात्र–छात्राओं के मौजूद व्यक्तित्व सामाजिक कौशल क्षमता तथा गामक सामाजिक एवं जीवन कौशलयताओं के स्तर की जांच करना।

2. सामाजिक कौशल जीवन कौशल करवाने के पश्चात् किसी और छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व, सामाजिक एवं जीवन कौशल तथा सामाजिक कौशल क्षमताओं की जांच करना।

निष्कर्ष

1. गति– पहले जीवन कौशल कार्यक्रम में गति में अधिक सुधार किया जाए बजाय दूसरे प्रकार के समाजिक कौशल कार्यक्रमों के।

2. शक्ति – दोनों समाजिक कौशल कार्यक्रमों प्रायोगिक समूहों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3. सहन शक्ति – प्रथम समाजिक कौशल कार्यक्रमों की अपेक्षा सहनशक्ति में और अधिक सुधार हुआ है।

माथुर एवं शर्मा (2013) ''जीवन कौशल द्वारा मूल्य निर्माण'' दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

उद्देश्य

विद्यार्थियों में जीवन कौशल के द्वारा समारात्मक परिणामों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

इस प्रायोजना के अंतर्गत विद्यार्थियों में जीवन कौशल के सकारात्मक परिणाम देखने को मिले। एक वर्षीय इस परियोजना के अंतर्गत दिये गये शिक्षण के प्रभाव से तीन मूल्य भावात्मक स्थिरता, नैतिक मूल्य, परोपकारिता अत्यधिक सकारात्मक पाये गये।

पीक (2014) ''पहली, दूसरी और तीसरी कक्षाओं के बालकों के ध्यान पर सामाजिक एवं जीवन कौशल के प्रभाव का एक अध्ययन'', देव संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

उद्देश्य

पहली दूसरी और तीसरी श्रेणी के बालको पर सामाजिक एवं जीवन कौशल के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

पहल, दूसरी और तीसरी श्रेणी के बालकों के ध्यान पर सामाजिक एवं जीवन कौशलाभ्यास के प्रभाव का अध्यन किया और पाया कि पहली श्रेणी के बालकों के ध्यान में 71. 5 प्रतिशत, दूसरी श्रेणी के बालको 81.31 प्रतिशत, तीसरी श्रेणी के बालकों में 84.85 प्रतिशत सकारात्मक सुधार पाया गया।

गुप्ता, रंजना (2014) ''महाविद्यालय छात्राओं की मनःस्तापी क्रियाएं, मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल एवं समायोजन पर प्रेक्षाध्यान, सामाजिक एवं जीवन कौशल क्रियाओं का प्रभाव'', वनस्थली विद्यापीठ, निवाई।

उद्देश्य

1. महाविद्यालयी छात्राओं की मनःस्तापी क्रियाएं जैसे जीवन कौशल, अवसाद, उन्माद, मनोग्रस्त, बाध्यता, स्नायुदौर्बल्यता एवं मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल तथा समायोजन का अध्ययन करना।

2. उपरोक्त मनःस्तापी क्रियाओं मानसिक, समाजिक एवं जीवन कौशल एवं समायोजन पर सामाजिक कौशल जेवन कौशल एवं सामाजिक एवं जीवन कौशल क्रियाओं तथा नैतिक क्रिया एवं दैनिक चर्या का प्रभाव देखना।

3. वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीय पद्धतियों से उन प्रभावों की व्याख्या करना।

निष्कर्ष

1. पूर्व प्रायोगिक स्तर पर तीन समूहों की छात्राओं का मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल मनःस्तापी यथा जीवन कौशल, अवसाद, मनोग्रस्त बाध्यता, उन्माद, स्नायुदौर्बल्यता तथा समायोजन के चारों क्षेत्रों तथा दया ग्रह सामाजिक समाजिक एवं जीवन कौशल एवं संवेगात्मक के स्तर की स्थितियां प्रायः समान स्थिति में हैं।

2. सामाजिक एवं जीवन कौशल क्रियाओं के नियमित अभ्यास करने से इन छात्राओं के मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल में सार्थक रूप से संवर्द्धन हुआ है तथा समाजिक एवं जीवन कौशल एवं संवेगातमक क्षेत्र में उत्तम स्थिति आ गई है।

3. सामाजिक कौशल क्रियाओं के नियमित अभ्यास से भी मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल संवर्द्धन किया जा सकता है। इस अभ्यास से भी पूर्वोक्त मनःस्तापी क्रियाओं में भी कमी आई है। इस समूह की छात्राएं भी मनःस्तापी क्रियाओं के द्वितीय स्तर अर्थात् सामान्य स्तर पर आ गई हैं।

माली, राजकुमार (2014) ''ध्यान एवं प्राणायाम का बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन'', देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

उद्देश्य

ध्यान एवं प्राणायाम जीवन कौशल क्रिया में भाग लेने वाले एवं न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1. ध्यान एवं प्राणायाम में भाग लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल भाग न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया। मानसिक समाजिक एवं जीवन कौशल के छह आयामों– सांवेगिक स्थिरता, सम्पूर्ण समायोजन, स्वायत्तता, सुरक्षा असुरक्षा की भावना, आत्म सम्प्रत्यय एवं जेवन कौशल शैक्षिक क्षमता सभी में सार्थक अन्तर पाया गया।

2. जीवन कौशल करने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थी सामाजिक कौशल, मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से स्वस्थ होते हैं जिसका सकारात्मक प्रभाव उनके समाजिक एवं जीवन कौशल पर पड़ता है।

शर्मा, दुर्गेश (2014) ''प्रेक्षाध्यान व जीवन कौशल को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाये जाने के प्रति प्रधानाध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन'', वनस्थली विद्यापीठ, निवाई।

उद्देश्य

प्रेक्षाध्यान व जीवन कौशल को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाये जाने के प्रति प्रधानाध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

प्रेक्षाध्यान व जीवन कौशल को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाये जाने के प्रति प्रधानाध्यापकों में बहुत अधिक मात्रा में जागरूकता पाई गई है। वे सभी विषयों को अत्यधिक उपसामाजिक एवं जीवन कौशली मानते हुए इसकी महत्ता को मानकर इसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के पक्ष में हैं।

शर्मा, मनदीप (2015) ''वयस्कों के मध्य समाजिक एवं जीवन कौशल सह सम्बन्धता के रूप में व्यक्तित्व के कारक का अध्ययन'', राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

उद्देश्य

1. व्यक्ति के बहुर्मुखी व्यक्तित्व का पता लगाना।
2. व्यक्ति के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का पता लगाना।

निष्कर्ष

1. व्यक्तित्व के दो कारक बहिर्मुखी होना, सहमत होना समाजिक एवं जीवन कौशल के साथ ऋणात्मक सह–सम्बन्ध दर्शाता है जबकि न्यूरोटिसिज्म प्रदर्शित करता है।

राजपुरकर, एम.वी. (2015) 'विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल, मानसिक तथा सांवेगिक विकास में सामाजिक एवं जीवन कौशल की भूमिका'', मनोसामाजिक एवं जीवन कौशल विभाग, इस्लामिक आजाद विश्वविद्यालय।

उद्देश्य

1. विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल, मानसिक और सांवेगिक विकास में सामाजिक एवं जीवन कौशल की भूमिका का अध्यन करना।

निष्कर्ष

सामाजिक एवं जीवन कौशल विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके कारण विद्यार्थियों के वजन, रोग प्रतिरोधक क्षमता और आलस्य की शिकायत दूर होती है। साथ ही सामाजिक एवं जीवन कौशल से विद्यार्थियों में भावनात्मक संबंध मजबूत होते है।

भटनागर, एस.ओ. (2016) 'महाविद्यालय के विद्यार्थियों के समाजिक एवं जीवन कौशल पर सामाजिक एवं जीवन कौशल के प्रभाव का अध्ययन'', कैवल्यधाम एस.एम.वाय.एम. समिति, मुंबई।

उद्देश्य

1. समाजिक एवं जीवन कौशल तथा सामाजिक एवं जीवन कौशल के मध्य अंतर्सम्बन्ध ज्ञात करना।

निष्कर्ष

सामाजिक एवं जीवन कौशल का समाजिक एवं जीवन कौशल पर बहुत अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आधुनिक चिकित्सा कौशल में जिन रोगों का इलाज नहीं हो पाता है उनका निदान सामाजिक एवं जीवन कौशल के द्वारा किया जा सकता है। सामाजिक एवं जीवन कौशल से रक्तचाप, तनाव, अनिद्रा, अपच आदि बिमारियां नहीं होती है। साथ ही यह मधुमेह, लीवर और किडनी तक की समस्याओं में प्रभावकारी है।

प्रताव, वी. (2016) ''तनाव और सामाजिक एवं जीवन कौशल : एक प्राथमिक संचार'', कंपलीमेन्ट्री थैरेपी इन क्लिनिकल प्रेक्टिस, संस्करण 15, अंक 2, मई 2014।

उद्देश्य

1. तनाव व सामाजिक एवं जीवन कौशल के मध्य संबंध ज्ञात करना।

निष्कर्ष

सामाजिक एवं जीवन कौशल तनाव को कम करने का सबसे कारगर उपाय है। यह मस्तिष्क में रक्त संचार अधिक करता है। मन को शांति प्रदान करता है साथ ही कई मानसिक समस्याओं से भी निजात दिलाता है।

सामाजिक एवं जीवन कौशल करने वाले व्यक्ति कभी तनाव में नहीं रहते है। यह तनाव से लड़ने की क्षमता उत्पन्न करता है, इससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

पसरीजा, पूजा (2016) – ''माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के जीवन एवं सामाजिक कौशलों का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया।

उद्देश्य

1. कला वर्ग के छात्र–छात्राओं के घरेलू कौशलों की तुलना करना।
2. विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के घरेलू कौशलों की तुलना करना।
3. कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के घरेलू कौशलों की तुलना करना।
4. कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के सार्वजनिक सेवाओं से सम्बन्धित कौशलों की तुलना करना।
5. कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के पारिवारिक कौशलों की तुलना करना आदि था।

निष्कर्ष

1. कला वर्ग के छात्र–छात्राओं के घरेलू कौशलों में कोई अन्तर नहीं है।

2. विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के घरेलू कौशलों में कोई अन्तर नहीं है।

3. कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के पारिवारिक जीवन कौशलों में कोई अन्तर नहीं है।

4. कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के सार्वजनिक सेवाओं से संबंधित कौशलों में कोई अन्तर नहीं है।

5. कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के वैयक्तिक व सामाजिक जीवन कौशलों में कोई अन्तर नहीं है।

शर्मा, ममता (2016) – ''उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के जीवन एवं सामाजिक कौशलों का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया।

उद्‌देश्य

1. कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों के सामाजिक संवेदना कौशल की तुलना करना।

2. कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के सामाजिक संवेदना कौशल की तुलना करना।

3. दोनों वर्गों के छात्रों के प्रजातांत्रिक कौशल की तुलना करना।

4. दोनों वर्गों के छात्र–छात्राओं के कानूनी साक्षरता कौशल की तुलना करना।

5. दोनों वर्गों के व्यवसायिक कौशल की तुलना करना।

6. दोनों वर्गों के छात्रों के लिंग समानता कौशल की तुलना।

निष्कर्ष

1. कला एवं विज्ञान संकाय के छात्रों के सामाजिक संवेदना कौशल में अन्तर नहीं है परन्तु छात्राओं में अन्तर पाया जाता है।

2. कला एवं विज्ञान संकाय के छात्रों के प्रजातांत्रिक कौशल में अन्तर नहीं है तथा छात्राओं के प्रजातांत्रिक कौशल में कोई भी अन्तर नहीं है।

3. दोनों वर्गों के छात्र–छात्राओं के व्यावसायिक कौशलों में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

अग्रवाल, विमल प्रसाद (2016) – ने 'जीवन कौशल' बनाएगा 'परफेक्ट पर्सन' के लेख में बताया कि राजस्थान राज्य के सभी स्कूलों में अब शिक्षा के साथ–साथ जीवन कौशल शिक्षा भी दी जायेगी।

उद्देश्य

1. कला विषय के तहत विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास, सामाजिक सम्बन्ध, स्वास्थ्य, रोजगार के बारे में मनोवैज्ञानिक तरीके से जानकारी प्राप्त करना।

निष्कर्ष

1. यह कला विषय राज्य के सभी विद्यालयों के सभी संकायों में लागू किया जायेगा। यह विषय विद्यार्थियों समाज, स्वास्थ्य और रोजगार सम्बन्धी विद्यार्थियों की भ्रान्तियों को दूर करने में सहायक होगा।

शर्मा, अंजलि (2016) – ''विभिन्न निकायों द्वारा संचालित विद्यालयों में जीवन कौशल शिक्षा से संबंधित गतिविधियों का अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया।

उद्देश्य

1. जीवन कौशल शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. जीवन कौशल शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों का अध्ययन करना।
3. राजकीय विद्यालयों में जीवन कौशल शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों का अध्ययन करना।
4. निजी विद्यालयों में जीवन कौशल से सम्बन्धित गतिविधियों का अध्ययन करना।
5. आदर्श विद्या मन्दिरों में जीवन कौशल शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1. जीवन कौशल शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक है।
2. वह सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। लेकिन जीवन कौशल शिक्षा का व्यवहारिक रूप में सही प्रकार से लागू किये जाने पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है।
3. सभी विद्यालयों में स्वजागरूकता हेतु कोई भी गतिविधियां जो कि बालक/बालिकाओं को स्वावलम्बी बनने के लिये आवश्यक है न के बराबर आयोजित की जा रही है।

वर्मा, हरीश कुमार (2017) – ने ''जीवन कौशल शिक्षा'' अपने लेख में जीवन कौशल शिक्षा क्या है के बारे में स्पष्ट करते हुए बताया कि जीवन कौशल शिक्षा वह शिक्षा है।

उद्देश्य

1. जीवन कौशल का महत्व ज्ञात करना।

निष्कर्ष

1. जो मानव जीवन को सरल, सुगम और वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर आनन्दपूर्वक जीवन जीने की कला सिखाती है। यह व्यक्ति को पूरी अर्थवत्ता के साथ जीने, संसार में अधिकतर आनन्द प्राप्त करने तथा ईश्वरीय चेतना में रहकर शाश्वत स्वतंत्रता के साथ जीवनयापन करने में समर्थ बनाती है।

2. बालक को वर्तमान में दी जा रही शिक्षा एक पक्षीय है जो उसके बौद्धिक विकास पर ही केन्द्रित है। जबकि शिक्षा का **उद्देश्य** बालकों का सर्वांगीण विकास है। इस हेतु जीवन कौशल शिक्षा को आवश्यक समझा गया है। इस **उद्देश्य** की पूर्ति हेतु जीवन कौशल शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने हेतु विचार किया गया है।

कुमारी (2018) ने गणित शिक्षण में जीवन कौशल सम्मिलित होना क्यों अनिवार्य है विषय की सही तस्वीर को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने अपने अध्ययन में विद्यालयी पाठ्यक्रम में गणित के सम्मानजनक स्थान में विश्व के विचारों को विस्तारित किया।

उद्देश्य

1. वर्तमान समय की तकनीकि समाज में गणित शिक्षा के परिवर्तित भूमिका का विश्लेषण करना।

निष्कर्ष

1. इस अध्ययन में जीवन कौशल से गणित को जोडने के लिए समस्या समाधान को माध्यम माना है। इसकी सहायता से बालक के वास्तविक सामाजिक पर्यावरण और अनुभवों को गणितीय समस्या परिस्थितियों को जोडा जा सकता है।

महेश (2018) ने अपने शोध में विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक जीवन और सामाजिक कौशल को चिन्हित किया।

उद्देश्य

1. विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक जीवन और सामाजिक कौशल को चिन्हित करना।

निष्कर्ष

1. अपने अध्ययन में उन्होनें विद्यार्थियों, अभिभावकों और अध्यापकों के मध्य जीवन कौशल के बारे में विभिन्न पसंदगियों को बताया।

मिश्रा (2019) ने विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए जीवन और सामाजिक कौशल से सम्बन्धित वरीयताओं का अध्ययन किया है।

उद्देश्य

1. विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए जीवन और सामाजिक कौशल से सम्बन्धित वरीयताओं का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1. अपनें अध्ययन में विभिन्न शैक्षणिक योग्यता, आय, जीवन स्तर, आवासीय स्तर पर अभिभावकों की अपनें बालको के लिए जीवन कौशल की वरियताओं का अध्ययन किया तथा अध्यापकों की शैक्षणिक योग्यताओं के अनुसार जीवन कौशलों की वरीयताओं का अध्ययन किया।

कुसुम लता (2019)

उद्देश्य

1. अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा की विषय वस्तु, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन से संबंधित अभिमतों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1. शोध में जीवन कौशल शिक्षा की विषय वस्तु क्रियान्वयन तथा मूल्यांकन की उपयुक्त विधाओं से संबंधित अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के अभिमतों को प्राप्त किया।

6. शोध के उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल और जीवन कौशल पर शिक्षा के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों के सामाजिक कौशल और जीवन कौशल पर शिक्षा के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक कौशल और जीवन कौशल पर शिक्षा के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल और जीवन कौशल पर शिक्षा के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल और जीवन कौशल पर शिक्षा के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

7. शोध की परिकल्पनाऐं

1. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल और जीवन कौशल पर शिक्षा के प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

2. उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों के सामाजिक कौशल और जीवन कौशल पर शिक्षा के प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

3. उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक कौशल और जीवन कौशल पर शिक्षा के प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

4. उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल और जीवन कौशल पर शिक्षा के प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

6. उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल और जीवन कौशल पर शिक्षा के प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

8. शोध विधि – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जाएगा।

9. जनसंख्या – शोध हेतु जयपुर जिले का चयन किया गया है। जयपुर जिले में उच्च प्राथमिक स्तर में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों का चयन जनसंख्या के रूप में किया गया है।

10. न्यादर्श – शोध अध्ययन हेतु जयपुर जिले के 5 शहरी विद्यालय और 5 ग्रामीण विद्यालयों का चयन किया जाएगा।

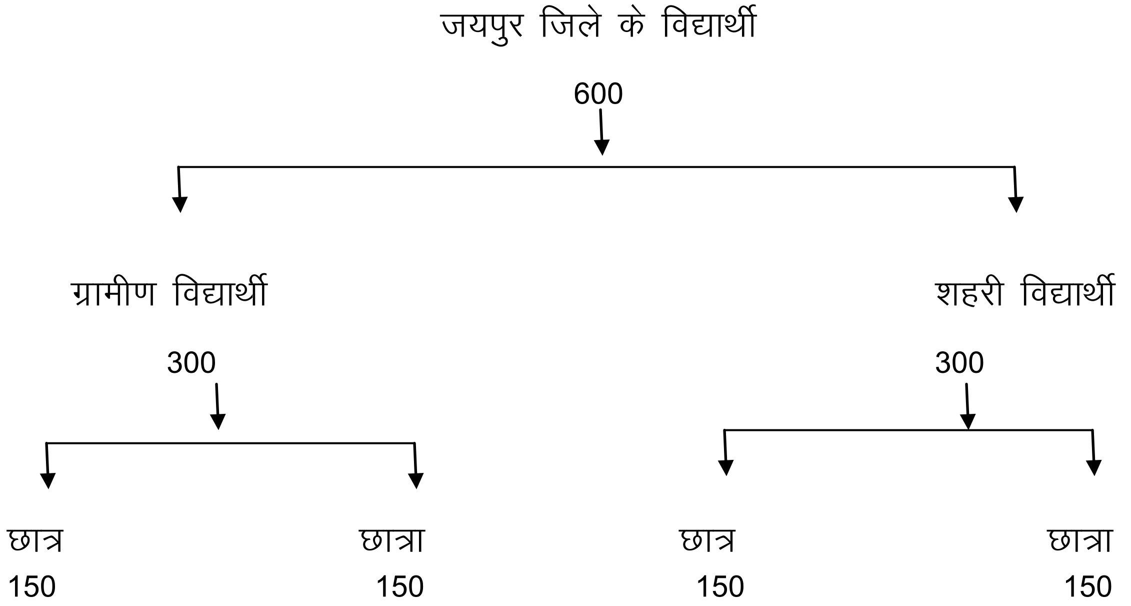

11. शोध के चर

शाब्दिक रूप से Variable का अर्थ होता है कि जो Vary कर सके अथवा परिवर्तित हो सके।

चर किसी घटना, क्रिया या प्रक्रिया का वह पक्ष या स्वरूप है जो अपनी उपस्थिति से किसी दूसरी घटना या प्रक्रिया को, जिसका अध्ययन किया जा रहा है, प्रभावित करे, चर कहलाता है। चर को परिवर्त्य परिवर्ती और चल राशि भी कहते है। जिस गुण, विशेषता या अवस्था का अध्ययन करना हमारा उद्देश्य है उसे चर कहते है।

चर के प्रकार –

चर के प्रकार निम्नानुसार है –

स्वतंत्र चर

स्वतंत्र चर वे होते है जिनके प्रभाव का अथवा कारक रूप में अध्ययन किया जाता है। ये चर स्थायी रूप से स्वतंत्र नही होते अर्थात् इनका मापन किया जाता है और प्रयोग के द्वारा उसके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है स्वतंत्र चर सदैव अन्य चरों को प्रभावित करता है।

आश्रित चर

स्वतंत्र चर का प्रभाव जिस चर के प्रभाव के आधार पर ज्ञात किया जाता है उसे आश्रित चर कहते है। आश्रित चर का मूल्य स्वतंत्र चर के मूल्य पर आधारित होता है।

प्रस्तुत शोध कार्य के चर –

स्वतंत्र चर – सामाजिक कौशल
जीवन कौशल

आश्रित चर – उच्च प्राथमिक स्तर

12. शोध में प्रयुक्त उपकरण – शोध संकलन हेतु स्वनिर्मित जीवन कौशल मापनी और सामाजिक कौशल मापनी का निर्माण किया जाएगा।

13. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

1. **मध्यमान –**

किसी समूह के प्राप्तांको का वितरण जब दो भागों में विभाजित हो जाता हैं तब वह मध्यमान कहलाता है। यदि किसी समूह के प्रदत्तों का वह प्राप्तांक जो इनका मध्य प्राप्तांक हो, अर्थात् उसके विचलन या योग सदैव शून्य हैं, दूसरे शब्दों में मध्य समंको

के विस्तार के अन्तराल में स्थित एक ऐसा शून्य होता है, जिसका प्रयोग श्रेणी के सभी मूल्यों का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया जाता है। समंक विस्तार के मध्य स्थित होने के कारण मध्यमान को केन्द्रीय मूल्य का माप भी कहा जाता हैं, क्योंकि व्यक्तिगत चर मूल्यों का अधिकतर जमाव इसके आस–पास होता है। मध्यमानों को प्राप्तांकों के योग में कुल समंकों की संख्या का भाग देकर निकाला जाता है।

सूत्र –

$$M = \frac{\sum X}{N}$$

M = मध्यमान

$\sum X$ = समंकों का योग

N = संमकों की संख्या

2. मानक विचलन – मानक विचलन के अन्तर्गत मध्यमान से विभिन्न सद्मूल्यों के जो विचलन प्राप्त होते हैं, उनका वर्ग निकाल कर उनका औसत ज्ञात किया जाता है तथा औसत का वर्गमूल ज्ञात किया जाता है।

$$SD = \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$$

SD = मानक विचलन

Σd^2 = समंकों का योग का वर्ग

N = समंकों की संख्या

3. टी–परीक्षण (T-Test) - टी–परीक्षण ऐसी सांख्यिकी विधि है जो यह बताने का प्रयास करती है कि दो सांख्यिकी राशियाँ एक–दूसरे से कहाँ तक भिन्नता रखती हैं। टी–अनुपात मध्यमान व प्रमाणिक विचलन के आधार पर भिन्नता की व्याख्या करता है।

सूत्र–

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_{21}^2}{N_2}}}$$

जहाँ–

t 'टी' मान का परीक्षण

$\sigma 1^2$ द्वितीय समूह के प्रमाप विचलन का मार्ग

M_1 प्रथम समूह का मध्यमान N_1 प्रथम समूह के आंकड़ों की संख्या

M_2 द्वितीय समूह का मध्यमान N_2 द्वितीय समूह के आंकड़ों की संख्या

$(\sigma 1)^2$ प्रथम समूह के प्रमाप विचलन का वर्ग

$(\sigma 2)^2$ द्वितीय समूह के प्रमाप विचलन का वर्ग

14. अध्ययन की परिसीमाऐं

1. क्षेत्र – प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।

2. स्तर – प्रस्तुत शोध में केवल उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

3. लिंग – प्रस्तुत अध्ययन में छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

4. न्यादर्श – प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श की संख्या 600 है।

5. प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल व जीवन कौशल के प्रभाव को ज्ञात करना है।

6. प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल व जीवन कौशल के प्रभावों के तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है।

15. अध्यायों की रूपरेखा

- प्रथम अध्याय – समस्या की पृष्ठभूमि
- द्वितीय अध्याय – संबंधित साहित्य का अध्ययन
- तृतीय अध्याय – अनुसंधान की प्रक्रिया एवं रूपरेखा
- चतुर्थ अध्याय – आंकडों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या
- पंचम अध्याय – निष्कर्ष एवं सुझाव
- संदर्भ ग्रंथ सूची
- परिशिष्ट

16. संदर्भ ग्रंथ सूची

- महेश ओम, (1995) ''आइडैंटीफिकेशन ऑफ लाइफ स्किल्स एसेंशियल फोर स्कूल स्टूडैंट्स'', एम.डी.एस. यूनि. अजमेर।
- नेशनल एड्स कंट्रोल, : (2000) हियरिंग फॉर ए गाइड टू फैमिली हेल्थ एण्ड लाइफ स्किल्स एजूकेशन फार टीचर एण्ड स्टूडेंट'', नेशनल एड्स कंट्रोल आरगनाइजेशन देहली।
- एन.सी.ई.आर.टी, ''जीवन के लिए शिक्षा''; शिक्षकों, विद्यार्थियों, पारिवारिक स्वास्थ्य एवं जीवन कलाओं की शिक्षा की गाइड''; एन.सी.ई.आर.टी यूनेस्को।
- राजासेनन, नायर वी; (1968) ''लाइफस्किल्स पर्सनैलिटी एण्ड लीडरशिप; एम/एस सैवॉड्स प्रिंट सिस्टम, न्यू देहली।
- राज्य संदर्भ केन्द्र, (2004) ''किशोर/किशोरियों के लिए जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण मॉड्यूल– जनसंख्या एवं विकास शिक्षा प्रकोष्ठ राज्य संदर्भ केन्द्र, राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, जयपुर।
- सेठ एम, (2000) ''प्लानिंग लाइफ स्किल्स एजूकेशन फोर एडोलसैंट इन कारपोरेटिंग, रिलेशनशिप, हेल्थ एण्ड जेंडर; यू.एन.एफ.पी.ए. न्यू देहली।
- टेक्सोनामी ऑफ एजूकेशन स्किल्स; (2011) केस, फैकल्टी ऑफ एजूकेशन, एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ोदा।
- यू.एन.ई.एफ.पी.ए., ''पीयर बेस्ड एडोलैसैंट एजूकेशन'', यू.एन.ई.एफ,पी,ए,, नई दिल्ली।
- यूनेस्को, (2001)''लाइफ स्किल्स इन नॉन फार्मल एजूकेशन'', ए रिव्यू यूनेस्को।
- वर्ल्ड हेल्थ आरगेनाइजेशन, (2001)''रीजनल फ्रेमवर्क फॉर इंट्रोडयूसिंग लाइफस्किल्स एजूकेशन टू प्रमोट दि हेल्थ ऑफ एडोलैंसैंट'', डब्ल्यू, एच.ओ. न्यू देहली (रीजनल ऑफिस फोर साउथ ईस्ट एशिया)।